REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 8 | MAY - 2018

बौद्ध कालीन शिक्षा दर्शन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी उपादेयता

डॉ. श्रीमती सुचिता इलयास
प्रवक्ता बी. एड. विभाग , सेन्ट एन्ड्रयूज कॉलेज
गोरखपुर यू.पी.

सारांश –

बौद्ध ने जाति–भेद को दूर करके सभी लोगो में अपने धर्म का प्रचार किया। मोक्ष प्राप्त करने के लिए उन्होंने यज्ञ आदि कर्म –काण्डों को दूर करके उनके स्थान पर ज्ञान–प्राप्ति अहिंसा, सदाचार तथा पवित्र जीवन को स्थान दिया। अपने धर्म का प्रचार करने के लिए साधन के रूप में उन्होंने बौद्ध काल में निम्नलिखित शिक्षा केन्द्र अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके थे।

बौद्ध कालीन शिक्षालयों के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने के लिए सभी जातियों के लिए समान रूप से खुले रहते थे। विधाथियों में ब्राह्मण और क्षत्रियों के लड़के अधिक होते थे। राजा महाराजाओं से लेकर मछुआरों तक के बच्चे एक साथ प्राप्त करते थे। बौद्ध कालीन शिक्षा में गुरू–शिष्य का सम्बन्ध अत्यन्त पवित्रता से परिपूर्ण होता था। शिष्य का जीवन अत्यन्त सादा तथा पवित्र होता था। संध में स्त्रियों को भी प्रवेश की आज्ञा मिल जाने के कारण स्त्री शिक्षा को बहुत बड़ा बल मिला तथा बहुत बड़ी प्रेरणा प्राप्त हुई।

बौद्ध युग में भारत अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा का केन्द्र था। सुदूर देशों से आकार छात्र यहाँ अध्ययन करते थे और अपने देश लौटकर वहाँ दया, प्रेम, अहिंसा, सत्य, बौद्ध धर्म, विश्व–बन्धुत्व आदि का संदेश फैलाते थे। आधुनिक भारत एक बार पुनः अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा का केन्द्र बनकर इन सिद्धान्तों का विश्व में व्यापक प्रसार कर सकता है।

प्रस्तावना –

अच्छी शिक्षा राष्ट्र निर्माण के सर्वश्रेष्ठ साधनों में से एक है। भारत का भविष्य भी काफी कुछ इसी बात पर निर्भर करता है कि समाधान किस प्रकार प्रस्तुत करती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पाश्चात्य भावापन्न और पूर्णतः राष्ट्र विरोधी हमारी यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली आधुनिक भारत की पृष्ठभूमि से एकदम विसंगत है। यह तो हमें उन अंग्रेजों की विरासत के रूप में मिली है जिन्होंने हममें से कुछ लोगों को अपनी भाषा में इसलिए दीक्षित किया कि हम उनके कार्यालयों में विलक्षण यांत्रिकि गति से कार्य कर सकें और शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य को दृढ़ता एवं संरक्षता प्रदान कर सकें परन्तु समय में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है और आज हमें भीरू एवं प्राणहीन लिपिकों के स्थान पर ऐसे स्त्री–पुरूषों की आवश्यकता हो, स्वार्थ के संकीर्ण दायरे से उठे हुए हो तथा रचनात्मक अर्न्तदृष्टि से सम्पन्न हो।

भारतीय परम्परा के अनुसार जब–जब संस्कृति एवं सभ्यताएं अधः पतित हुई है, तब–तब जीवन की नई दिशाओं की ओर संकेत करने तथा मानव हृदय में शक्ति एवं विश्वास की लहर भरने के लिए महान मनीषियों को सभ्य राष्ट्रों के बीच पुनः पुरातन गरिमा एवं उत्कर्ष से मण्डित देखने हेतु हमें महात्मा बुद्ध के शिक्षा के महत्व को स्वीकार करना होगा।

शिक्षा का उद्देश्य –

बौद्धो ने एक विकसित शिक्षा प्रणाली विकास किया है। जिसके अपने विशिष्ट उद्देश्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है। बौद्ध धर्म के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचार आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है। गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध दर्शन मानवता के कल्याण हेतु है। बुद्ध ने जिस प्रकार से दुःख को पहचाना और उससे बचने का जो मार्ग दिया, वह बौद्ध धर्म दर्शन की एक बड़ी उपलब्धि थी। बताये गये मार्ग का अनुसरण कर आज दुःखो से त्रस्त मानव समाज उससे छुटकारा प्राप्त कर सकता हैं। **उनका कहना था कि – ''व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि**

कर्म से ब्राह्मण या शुद्ध होता हे। केवल ब्राह्मण ही स्वर्ग में सुख भोग के सुयोग्य पात्र नहीं होते वरन् पुण्य कर्मों द्वारा क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र भी स्वर्ग के अधिकारी हो सकते हैं। वर्ण व्यवस्था एवं छुआछूत को कम करने में बौद्ध धर्म दर्शन बहुत ही सहायक है।''

नागरिक एवं समाजिक कर्तव्य बोध – बौद्ध काल में जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति था फिर भी नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्य बोध की उपेक्षा नहीं की गयी थी। सबसे अधिक बल करूगा और दया पर दिया गया हे। आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के दुःखों को नहीं समझ सकता और अपने कर्तव्य पालन को सही ढंग से नही निभा रहा है जो इस युग में अतिआवश्यक हैं।

नागरिक एवं समाजिक कर्त्तव्य बोध – इस काल में जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति था फिर भी सामाजिक जीवन की उपेक्षा नहीं की गयी थी। बौद्ध धर्म में सबसे अधिक बल करूणा और दया पर दिया गया हैं। बिना करूणा भाव के एक मनुष्य दुसरे मनुष्य के दुःखों को नहीं समझ सकता और अपने कर्तव्य पालन को सही ढंग से नही निभा रहा है जो इस युग में अतिआव''यक हैं

समाजिक कुशलता में वृद्धि – बौद्ध काल में जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति था फिर भी सामाजिक जीवन की उपेक्षा नहीं की गयी थी। बौद्ध धर्म में सबसे अधिक बल करूणा और दया पर दिया गया है। बिना करूणा भाव के एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के दुःखों को दूर नही कर सकता और जब तक सब मनुष्य एक दूसरे के दुःखो को दूर नही करते संसार के दुःखों से बचा नहीं जा सकता।

बौद्ध शिक्षा में अनेक उपदेश यथा सत्य बोलना, माता–पिता की आज्ञा का पालन करना, ईमानदारी, चोरी न करना इत्यादि परोक्ष रूप से सामाजिक कुशलता की वृद्धि करने पर ही जो देती है।

समाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों का संवर्द्धन– आज हम सांस्कृतिक संकट के काल से गुजर रहे हैं। भूमण्डलीकरण के इस युग में अपना कहने के लिए कुछ भी नहीं रह गया है। यह विचित्र बात है कि लोग विविधता की बात करते हैं किन्तु संस्कृति को आज एक उत्पादन की तरह समझा जा रहा है।

आज हमारी प्रत्येक सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधि अनैतिक मल्यों पर अपना जीवन यापन कर रही है। परिणामतः साहित्य एवं संस्कृति अब सत्य मूल्यों पर न गढ़े जाकर कुछ पूर्व निर्धारित प्रतिमानों में नियत किए जा रहे है। यही कारण कि आज महात्मा बुद्ध का शिक्षा दर्शन प्रासंगिक हो चुका है।

निष्कर्ष –

महात्मा बुद्ध की शिक्षा पद्धति को वर्तमान सन्दर्भ में लागू कर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की अनेक कमियो को दूर किया जा सकता है। महात्मा बुद्ध के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का यदि अनुसरण किया जाय तो शिक्षा में उद्देश्यहीनता, अनुशासनहीनता, जातियता, संकीर्णता, अन्धविश्वास की समस्याओं का स्वतः निराकरण हो जायेगा। साथ ही विधार्थियों में अनुशासन, विवेकशीलता, आध्यात्मिकता, सोहार्दपूर्ण वातावरण पारस्परिक सहयोग सेवाभाव इत्यादि उदान्त मूल्यों को बढ़ावा देने में सक्षम होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, डॉ0 अनिल कुमार : बौद्धकालीन शिक्षा पद्धति, कला प्रकाशन, बी. एच. यू. वाराणसी 2008
2. शाक्य, राजेन्द्र प्रसाद : 'बौद्ध दर्शन' – मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 2001
3. शर्मा, आर0 एस : मैटेरियल बैकमाउन्ड ऑफ ओरिजिन ऑफ बुद्धिष्ट, सेन एण्ड राव (संस्करण) नई दिल्ली 1998
4. सिंह, महेन्द्र नाथ : बौद्ध तथा जैन धर्म, विश्वविद्यालय प्रकाशन वराणसी 1990
5. श्रीवास्तव, के0 सी0 : 'प्राचीन भारत का इतिहास' यूनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद 1993
6. थापर, रोमिला : भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1988

7. दीक्षित, उपेन्द्र नाथ : 'भारतीय शिक्षा की प्रमुख समस्याएं, राजस्थान बुक स्टोर्स उदयपुर 1985
8. ओड, लक्ष्मी कान्त के0 : 'शिक्षा के दार्शनिक आधार–राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 1983
9. पाण्डे गोविन्द चन्द्र : बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, लखनऊ, 1963।
10. टी0 डब्ल्यू0 रिजडेविड्स : बुद्धिष्ट इंड़िया, कलकत्ता 1950।
11. झा द्विजेन्द्रनारायण, श्रीमालीकृष्णमोहन : प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली विश्वविद्यालय।